राज्य अध्याय 5

1	**प्रार्थना**

समूह का अगुवा। परमेश्वर की उपस्थिति के विषय में जागरूकता के लिए, उसकी आवाज सुनने के लिए और उसके आत्मा के माध्यम से परमेश्वर द्वारा मार्गदर्शन पाने के लिए ***प्रार्थना करें।*** अपने समूह और परमेश्वर के राज्य का प्रचार करने से सम्बन्धित इस पाठ को प्रभु के हाथों में समर्पित करें।

2	**साझा करना** (20 मिनट) ***(शांत समय)*** **व्यवस्थाविवरण 4–7**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें*** ***(या*** अपने नोट्स से ***पढ़ें)*** कि आपने दिये गये बाइबल अनुच्छेद (व्यवस्थाविवरण4,5,6 और 7) से शान्त समय में क्या सीखा है।

अगर कोई व्यक्ति अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें और लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3	**स्मरण करना** (5 मिनट) ***(परमेश्वर का राज्य)*** **(5) दानिय्येल 2:44**

दो–दो करके

(5) परमेश्वर के राज्य की जीत। दानिय्येल 2:44। उन राजाओं के समय में स्वर्ग का परमेश्वर ऐसा राज्य स्थापित करेगा जो कभी नाश नहीं किया जायेगा न ही दूसरे लोगों के लिए छोड़ा जाएगा। वह उन सब राज्यों को कुचल देगा और उन्हें समापन की तरफ ले आयेगा, परन्तु वह स्वयं सदा बना रहेगा।

4	**बाइबल अध्ययन** (85 मिनट)***(यीशु का दृष्टान्त)*** **दुष्ट किसान**

"दुष्ट किसान का दृष्टान्त" मत्ती 21:33–39

<u>परमेश्वर के राज्य में परमेश्वर के सन्देशवाहक</u> के बारे में है।

"दृष्टान्त" एक स्वर्गीय अर्थ के साथ एक सासांरिक कहानी है। यह एक आत्मिक सच्चाई को सिखाने के लिए तैयार की गई जीवन से जुड़ी कहानी या उदाहरण है। यीशु ने परमेश्वर के राज्य के भेदों को उजागर करने के लिए दैनिक जीवन से जुड़ी घटनाओं और साधारण स्थानों का इस्तेमाल किया ताकि वह लोगों को उनकी स्थिति की वास्तविकता और नवीनीकरण की आवश्यकता को समझा सकें।

हम दृष्टान्त का अध्ययन करने के लिए छः दिशा निर्देशों का उपयोग करके दृष्टान्तों का अध्ययन करेंगे (मैनुएल 9, परिशिष्ट 1 को देखें)।

पढ़ें। मत्ती 21:33-46, मरकुस 12:1-12, लूका 20:9-19।

---

1. दृष्टान्त की स्वाभाविक कहानी को समझें।

परिचय दें। दृष्टान्त को आलंकारिक भाषा में बताया गया है और दृष्टान्त का आध्यात्मिक अर्थ उसी पर आधारित है। इसलिए हम पहले शब्दों और सांस्कृतिक और ऐतिहासिक तथ्यों का और कहानी की पृष्ठभूमि का अध्ययन करेंगे।
चर्चा करें। कहानी में जीवन से जुड़े तत्व क्या हैं?
ध्यान दें।

जमींदार और उसकी जमीन। जमींदार ने एक नयी दाख की बारी लगाई। उसमें कुछ भी नहीं था उस में से लाभ की प्राप्ति की अपेक्षा करने से पहले पूरी सम्पत्ति का निर्माण करना था । उसने दाख बेल को लगाया, दाख की बारी की चारों और दीवार को बनाया, दाखरस निकालने के लिये गढ्हा खोदा और एक चौकीदारी के लिये एक मिनार का निर्माण किया। चोरों और जानवरों से बचाने के लिए दीवार बनाई गई थी। दाखरस निकालने के गढ्ढे में सामान्यतः धरती में दो छेद किये जाते हैं और दो पत्थर या तो आमने सामने होते हैं या फिर एक बड़ी चट्टान को काटकर ही गढ्हा खोदा जाता है। ऊपर का छेद चौड़ा और उथला होता है और उसमें पके अंगूरों को रखा जाता और कुचलेने वालों के पैरों से कुचला जाता है (यशायाह 63:2-3)। पके हुए अंगूरों से अंगूरों का रस निकलता है और एक पाइप के माध्यम से या नीचे की तरफ बनाये गये ढाल से निचले छेद में चला जाता था, यह छेद गहरा और सकरा होता था । बाद में मज़दूर अंगूर के रस को मटकों में भर देते थे(हाग्गै 2:16)। मटकों में ख़मीरण करने से अंगुर का रस दाखरस में बदल जाता है। ऊँची मीनार का निर्माण सम्भवतः कई पत्थरों से किया गया होगा जो पत्थर दाख की बारी को साफ करने के बाद खेत से निकले होंगे (यशायाह 5:2)। चोर, सियार और लोमड़ियों से किसी भी खतरे से आगाह करने के लिए मिनार पर एक चौकीदार तैनात किया गया था (श्रेष्ठगीत 2:15)। मिनार को भण्डारण के रूप में भी इस्तेमाल किया जा सकता था। इस प्रकार कहानी यह स्पष्ट करती है कि यह आदमी न केवल दाख की बारी का स्वामी है बल्कि उसने उसे खुद लगाया है और इसे स्वयं अपने लिए बनाया है।

किसानों और स्वामी के बीच समझौता। स्वामी ने अपनी दाख की बारी को किसानों को पट्टे पर दिया जैसा कि दृष्टान्त स्पष्ट रूप से इंगित करता है कि इन किसानों को किराये के भुगतान के रूप में स्वामी को एक निश्चित राशि देनी थी (मत्ती 21:34, मरकुस 12:2, लूका 20:10)। दाख की बारी किसानों की नहीं हुई वरन उस पर स्वामी का ही कब्ज़ा बना रहा!

दास। जब अंगूरों की कटनी का समय आया, तब स्वामी ने अपने नौकरों को भेजा कि वह फलों का अपना हिस्सा प्राप्त करे। उनको अधिकार के साथ भेजा गया था और उन्होंने अपने स्वामी के नाम पर उन्होंने माँग या उनसे अनुरोध किया।

.

यह कहानी कारणों की सीमाओं से परे चली जाती है। किसान या बटाईदार दुष्ट, बेईमान और क्रूर थे। उन्होंने समझौते पर कायम नहीं रहे। उन्होंने स्वामी के दासों को स्वामी के हिस्से के फल देने

की बजाय उनके साथ दुर्व्यवहार किया। एक दास को पीटा गया, दूसरे को देखते ही मार दिया गया और तीसरे पत्थरवाह करके मौत के घाट उतार दिया गया। स्वामी के दासों के साथ किया गया दुर्व्यवहार खुद मालिक की बेईज्जती और उसे अस्वीकार किया जाता था। सामान्य मानवीय रिश्तों में किसी ने भी यह उम्मीद की होगी कि दाख की बारी के स्वामी में इन दृष्ट किसानों को तुरन्त दण्डित किया होगा। परन्तु , उसने उन्हें अपने कर्तव्य को पूर्ण करने का एक और अवसर देने का फैसला किया। इसलिए उसने अपने और दासों को भेजा। हालांकि इन नौकरों के साथ भी वैसा की व्यवहार किया गया।

फिर कहानी एक नाट्कीय चरम सीमा पर पहुँच जाती हैः स्वामी अपने बेटे को उन दुष्ट किसानों के पास भेजता है। मरकुस 12:6 बताता है "अब एक ही रह गया था, जो उसका प्रिय पुत्र था, अन्त में उसने उसे भी उनके पास यह सोचकर भेजा कि वे मेरे पुत्र का आदर करेंगे।" यह स्पष्ट है कि स्वामी का एक ही पुत्र था और वह उस बेटे से बहुत प्रेम करता था। उस बेटे के अलावा उसके पास कोई और नहीं था जिसे वह भेज सके। यह किसानों के लिए स्वामी का अन्तिम वचन था। वह जानता था कि वे किसान दुष्ट और क्रूर थे, लेकिन फिर भी उसने अपने इकलौते और प्रिय बेटे को उनके पास भेजा।

बेवजह ही दुष्ट किसानों ने यह पाप किया था लेकिन उसके बावजूद भी उनके लिए स्वामी का प्यार पूरी तरह से समझ से परे था। इस तथ्य को जानने के बावजूद कि किसानों ने स्वामी के अधिकारों पर इतनी बेरहमी से हमला किया, फिर भी उसने उन्हें एक और अवसर दिया। इस तथ्य को जानने के बावजूद कि दुष्ट किसानों ने उसके दासों को मार दिया है उसने उनके पास अपने एकमात्र प्रिय बेटे को भेज दिया। यह कहानी तर्क की सीमाओं से परे जा सकती है, क्योंकि यह एक दृष्टान्त की कहानी है।

दुष्ट किसानों ने स्वामी के बेटे के साथ जो कुछ किया वह आवेग में किया गया काम नहीं था। इसके विपरीत, यह जानबूझकर किया गया काम था और यह हत्या पूर्व निर्धारित थी। उन्होंने बेटे की हत्या करने की साजिश रची कि वे दाख की बारी पर अपना कब्जा कर सकें। उनका अपने बारे में यह सोचना कितना मूर्खता से भरा था कि वे उस दाख की बारी को अपने कब्जे में ले सकते हैं। क्योंकि स्वामी अभी तक जीवित था और वह आकर उन सबको गम्भीर रूप से दण्डित कर सकता था। भजन 2:1–4 के साथ तुलना करें, जहाँ पृथ्वी पर राजाओं ने परमेश्वर और उसके अभिषिक्त के खिलाफ साजिश रची, लेकिन परमेश्वर स्वर्ग का परमेश्वर स्वर्ग से उन पर हँसता है।

2. तत्कालीन सन्दर्भ की जांच करें और दृष्टान्त के तत्वों को निर्धारित करें।

परिचय। दृष्टान्त की "कहानी" के सन्दर्भ में कहानी की "संरचना" और दृष्टान्त की "व्याख्या या अनुप्रयोग" हो सकती है। दृष्टान्त की संरचना दृष्टान्त को बताने के उपलक्ष्य के बारे में बता सकती है, या दृष्टान्त बताने के समय की *परिस्थितियों* का वर्णन कर सकती है। संरचना आमतौर पर दृष्टान्त की कहानी से *पहले* पाई जाती है और व्याख्या या अनुप्रयोग आमतौर पर दृष्टान्त की कहानी के बाद पाया जाता है।

खोजें और चर्चा करें। कहानी और इस दृष्टान्त की व्याख्या या अनुप्रयोग की संरचना क्या है?

ध्यान दें।

(1) दृष्टान्त की संरचना मत्ती 21:1-32 में निहित है।

यह "पवित्र सप्ताह" ("Week of the Passion") का एक हिस्सा है, जो कि यीशु मसीह को क्रूस पर चढ़ाए जाने से पूर्व अन्तिम सप्ताह था।

मन्दिर की सफाई (मत्ती 21:12-17)। यह रविवार को यरूशलेम में यीशु के विजयी प्रवेश के साथ लोगों की बड़ी भीड़ की उपस्थिति में शुरू हुआ, जिसमें लोगों ने चिल्लाकर कहा कि वह मसीह था (मत्ती 21:1-11)। तब यीशु ने दूसरी बार मन्दिर को साफ किया (तुलनाः यूहन्ना 2:13-16 में मन्दिर की पहली सफाई की गई)। उसने उन सभी लोगों को मन्दिर से बाहर भगा दिया जिन्होंने मन्दिर को बाज़ार बना रखा था और पैसे की लेन-देन करने वालों और सर्राफों की मेजों को पलट दिया। महायाजक, व्यवस्था के शिक्षक और यहूदियों के बीच राजनेता नाराज़ थे और यीशु को मारने के लिए रास्ता तलाशने लगे। तौभी उन्हें ऐसा करने का कोई तरीका नहीं मिला, क्योंकि सभी लोग उसके उपदेशों से चकित थे (मरकुस 11:18, लूका 19:47-48)। उसने उन सभी अन्धों और लंगड़ों को ठीक किया जो मन्दिर के परिसर में उसके पास आये। मन्दिर परिसर में उपस्थित बच्चे चिल्लाने लगे कि यीशु "दाऊद का पुत्र " अर्थात् "मसीह", लेकिन महायाजक और व्यवस्था के शिक्षक क्रोधिक थे और उन्होंने यीशु को डाँटा कि वह स्वयं मसीह होने से इंकार नहीं कर रहा है!

अंजीर के पेड़ को शाप देना (मत्ती 21:18-20)। सोमवार को, यीशु भूखा था और वह एक अंजीर के पेड़ की तरफ फल की तलाश में गया था जो थोड़ी दूरी पर ही था। उसे पत्तियों के अलावा इस पर कुछ भी नहीं मिला, कोई फल नहीं मिलने के कारण, उसने उसे शाप दिया। जब वे मंगलवार को उसी पेड़ के सामने से गुजरे, तो पेड़ अपनी जड़ों से पूरी तरह से ऊपर की ओर सूख चुका था (मरकुस 11:20)! यीशु पेड़ पर क्रोधित नहीं थे। इस घटना का गहरा अर्थ है। दुष्ट किसानों का दृष्टान्त इस प्रश्न का उत्तर देता है।

दो पुत्रों का दृष्टान्त (मत्ती 21:28-32)। उस दिन यीशु ने फिर से मन्दिर के आंगन में लोगों को सिखाया और सुसमाचार का प्रचार किया (लूका 20:1)। महायाजक और व्यवस्था के शिक्षक, यहूदी प्राचीनों के साथ यह सवाल उठाने लगे कि उसे मन्दिर में आकर राज्य के सुसमाचार का प्रचार करने और सिखाने का अधिकार किसने दिया है। क्योंकि उन्होंने यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के अधिकार को मानने से इंकार कर दिया, उसने भी उन्हें यह बताने से मना कर दिया कि वह किस अधिकार से प्रचार करता है। तब उसने उन्हें दो बेटों के दृष्टान्त को बताया, जो इस्राएल के राजनेताओं द्वारा यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के अधिकार को न मानने पर बल देते हैं।

इस्राएल के नेताओं और उनके अनुयायियों का विरोध। इसलिए यह स्पष्ट है कि दुष्ट किसानों के दृष्टान्त की संरचना यीशु मसीह के प्रति महायाजक, व्यवस्था के शिक्षक और यीशु मसीह के खिलाफ यहूदी प्राचीनों का विरोध था। इस्राएल देश में यीशु मसीह को लेकर आपसी मतभेद स्पष्ट था। इस्राएल के आम लोगों में से कई उसकी शिक्षाओं पर आश्चर्यचकित थे। लेकिन इस्राएल के लोगों और उनके नेताओं ने यीशु मसीह को मसीह के रूप में अस्वीकार कर दिया। उन्होंने उसके द्वारा किये गये आश्चर्यकर्मों को शैतान के कार्यों की उपमा दी, और उन्होंने उसे प्रचारक और सुसमाचार के शिक्षक के रूप में अस्विकृत कर दिया। असल बात तो यह है कि वे पहले ही उसे मारने की साजिश रच चुके थे (यूहन्ना 11:53)।

(2) दृष्टान्त की कहानी मत्ती 21:33–41 में निहित है।
दो बातों पर विशेष रूप से ध्यान देने की ज़रूरत हैः

"दाख की बारी से बाहर निकाले जाने" का अर्थ। जबकि मत्ती और लूका का कहना है कि स्वामी के बेटे को पहले दाख की बारी से बाहर फेंका गया और फिर मार दिया गया, मरकुस का कहना है कि पहले उसे मारा गया और फिर उसे दाख की बारी से बाहर फेंका गया। इन दोनों में कोई खास अंतर नहीं है। मत्ती और लूका ऐतिहासिक अनुक्रम पर ज़ोर देते हैं, कि यीशु को यरूशलेम के द्वार के बाहर ले जाया गया और फिर क्रूस पर चढ़ाया गया (इब्रानियों 13:12)। और मरकुस ने इस तथ्य पर ज़ोर दिया कि जिन्होंने *उसे सबसे अधिक शर्मनाक तरीके से मार डाला,* अर्थात एक शापित व्यक्ति के रूप में उन्होंने उसे दाख की बारी से बाहर निकाला। तीनों प्रचारक इस अभिव्यक्ति का उपयोग करते हैं ("दाख की बारी से बाहर फेंक देना") जो इस्राएल (प्राकृतिक) राष्ट्र द्वारा यीशु मसीह की अस्वीकृति का प्रतीक है।

सुनने वालों की आरम्भिक प्रतिक्रिया। यहूदियों के बीच, शिक्षक अकसर सुननेवालों के ध्यान को आक्रषित करने के लिए से प्रश्न पूछते हैं ताकि जिस विषय पर चर्चा की जा रही है उसमें उनकी रूची बढ़ती जाए। जब यीशु अपनी कहानी बता चुके थे कि कैसे दुष्ट किसानों ने दाख की बारी के स्वामी के इकलौते और प्रिय पुत्र को मार डाला, उसने अपने सुननेवालों से प्रश्न पूछा, जिससे उन्हें एक आरम्भिक प्रतिक्रिया मिली। उसने पूछा "इसलिए, तब दाख की बारी का स्वामी आयेगा, वह उन किसानों के साथ क्या करेगा?" उसके सुननेवालों ने, जिनमें कई महायाजक, व्यवस्थापक और यहूदी प्राचीन शामिल थे उन्हें उत्तर दिया, "वह उन बुरे लोगों को बुरी रीति से नष्ट करेगा, और वह दाख की बारी का ठेका दूसरे किसानों को दे देगा, जो समय पर उसे फल दिया करेगें।" इस उत्तर के साथ प्रभु यीशु मसीह के दुश्मनों ने खुद को दोषी ठहराया! इस तरह से प्रभु यीशु ने सही उत्तर देने वाले लोगों पर दोष लगाया।

इसकी तुलना 2शमूएल 12:1–12 में नातान द्वारा राजा दाऊद के व्यभिचार के पाप का सामना करने से करेंः पहले नातान का दृष्टान्त (पद 1 से 4), फिर दाऊद ने आक्रोश से भरी आरम्भिक प्रतिक्रिया दी (पद 5–6) और अंत में नातान का स्पष्टीकरण और अनुप्रयोग जो राजा दाऊद पर आया "तू ही वह व्यक्ति है " (पद 7–12) जब नातान बोल रहा था, दाऊद इस बात से अनजान था कि नातान गुप्त रीति से उसी के बारे में बोल रहा है। इसी तरह, इस्राएल के अगुवे और उनके अनुयायी इस बात से अनजान थे कि यीशु मसीहयह दृष्टान्त उनके बारे में बोल रहे थे।

(3) दृष्टान्त की व्याख्यां या अनुप्रयोग मत्ती 21:42–44 में निहित है।
यीशु उन लोगों की निंदा करता है जिन्होंने सिर्फ यह कहकर सही उत्तर दिया है कि "क्या तुमने कभी पवित्रशास्त्र में नहीं पढ़ा (भजन. 118:22–23): 'जिस पत्थर को राजमिस्त्रियों ने निकम्मा ठहराया था, वही कोने का सिरा हो गया; यह प्रभु की ओर से हुआ, और हमारी दृष्टि में अद्भुत है।' इसलिये मैं तुमसे कहता हूँ कि परमेश्वर का राज्य तुम से ले लिया जायेगा जो और जो ऐसी जाति को जो उसका फल लाए, दिया जाएगा।" लूका रचित सुसमाचार जोड़ता है "जो कोई इस पत्थर पर गिरेगा, वह चकनाचूर हो जाएगा; और जिस पर वह गिरेगा, उसको पीस डालेगा" (लूका 20:18, दानिय्येल 2:44–45)।

यह "पत्थर" पुराने और नये नियम में अलग–अलग स्थानों में अलग–अलग सन्दर्भ में देखा गया है।

पुराने नियम में पत्थर। भजन संहिता 118:22-23 यहाँ पत्थर इस्राएल के सन्दर्भ में आया है। इस्राएल के आसपास के राष्ट्रों के अगुवों और प्रमुख लोगों ने इसका तिरस्कार और इसे अस्विकार कर दिया। फिर भी इस्राएल इस मायने में राष्ट्रों में प्रमुख बन गया क्योंकि यहोवा ने याकूब के साथ अपनी वाचा बांधी और इस्राएल को उसकी व्यवस्था दी उन्होंने किसी और राष्ट्र के लिए ऐसा नहीं किया था। दूसरे राष्ट्र परमेश्वर की व्यवस्था को नहीं जानते थे (भजन संहिता 147:19-20)।

नये नियम में पत्थर। यीशु अब दिखाते हैं कि भजन संहिता 118:22-23 की भविष्यद्वाणी स्वामी के पुत्र में अपनी पूर्णता तक कैसे पहुंचती है। यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र और सच्चा इस्राएली है। (यशायाह 41:8-14 और 43:1-7 की तुलना यशायाह 42:1-7 और 49:17 के साथ करें)! इस्राएल राष्ट्र का प्राकृतिक महत्व केवल यीशु मसीह में और उसके माध्यम से ही है (तुलना करें यूहन्ना 4:22; प्रेरितों. 13:23; प्रकाशितवाक्य 12:1,2,5)। जो कोई भी यीशु मसीह का तिरस्कार करता है, वह सच्चा इस्राएली नहीं और जो यीशु मसीह को स्वीकार करता है, वह सच्चा इस्राएली है(अर्थात् परमेश्वर के सच्चे लोगों में से है)! यीशु मसीह स्वयं "पत्थर" हैं जिसे महायाजाकों, व्यवस्था के शिक्षकों और इस्राएल के प्राचीनों द्वारा स्वीकार नहीं किया गया था। कुछ दिनों के बाद, वे यीशु को क्रूस पर चढ़ाने के लिए इस्राएल की भीड़ का नेतृत्व करते हैं। यूहन्ना 1:11 सचमुच उसकी पूर्णता को प्रगट करता है, "वह अपने घर आया और उसके अपनों ने उसे ग्रहण नहीं किया!"

"तिरस्कृत पत्थर" "कोने के सिरे का पत्थर" बन गया। क्रूस पर चढ़ाया गया यीशु पुनः जीवित होकर सम्पूर्ण जगत में और संसार के इतिहास में सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति बन जाएंगे!

और इस्राएल के पुराने राष्ट्र का क्या होगा, इस्राएल के अविश्वासियों का क्या होगा जिन्होंने मसीह का तिरस्कार किया? यीशु ने कहा कि परमेश्वर के राज्य को इस्राएल से ले लिया जाएगा और उन लोगों को दे दिया जाएगा जो इसके योग्य फल लाएँगे। यहाँ "परमेश्वर का राज्य" का अर्थ विशेषाधिकार पाये हुए लोगों से और "परमेश्वर के लोगों" का खिताब पाये हुए लोगों से है, जिन्होंने इस्राएल में पुराने नियम के समय के दौरान आनन्द लिया था (रोमियों 9:4-5, इफिसियों 2:11-12)। इसका अर्थ धन्य वचन और उद्धार का वह कार्य भी है, जो यीशु मसीह ने मसीह के रूप में पूर्ण किया था और नये नियम के समय के शुरूआत में इस्राएल के प्राकृतिक राष्ट्र को दिया था। परमेश्वर का स्वाभाविक राज्य इस्राएल से दूर कर दिया जायेगा, क्योंकि इस्राएल के प्राकृतिक राष्ट्र ने अपने दायित्वों के अनुरुप जीवन व्यतीत नहीं किया। अब से, परमेश्वर का राज्य इस्राएल के भौगोलिक सीमाओं तक ही सीमित नहीं, बल्कि संसार के अन्य सभी राष्ट्रों के लोगों को शामिल करने के लिए राज्य का विस्तार होगा।

पुराने नियम का प्राकृतिक इस्राएल राष्ट्र, उनके आत्मिक अगुवों के द्वारा उन दुष्ट किसानों की तरह प्रस्तुत किया गया (तुलना रोमियों 5:12)। परमेश्वर के राज्य और उसके विशेषाधिकारों सहित संसार की हर वस्तु का स्वामी परमेश्वर पिता है। उसने अपने इकलौते पुत्र, यीशु मसीह को संसार में, इस्राएल में अपने लोगों के पास भेजा, और उन्होंने उसे वह देने से इनकार कर दिया जो उसका हक था। "दाख की बारी" उन लोगों का प्रतिनिधित्व करती है जिन्हें परमेश्वर विशेषाधिकार और "परमेश्वर के लोगों" के रूप में दर्जा देते हैं। इसलिए परमेश्वर पिता उन लोगों को राज्य देगें जो "परमेश्वर के दान को स्वीकार करेंगे"(रोमियों 5:17) और जो परमेश्वर के राज्य के योग्य फल लायेगें (मत्तर 22:43)। अर्थात्, वह अपने सभी विशेषाधिकारों, लाभ और अवसरों को अपने लोगों

को देगा,जिसमें संसार के हर राष्ट्र के सभी मसीही विश्वासी लोग शामिल होगें। इस्राएल के पुराने नियम के स्थान पर "परमेश्वर के लोगों" रूप में, मसीह की कलीसिया में "परमेश्वर के नए लोगों" का उदय होगा जिनमें ऐसे लोग शामिल होंगे जो यहूदियों और गैर–यहूदियों (अन्यजातियों) के बीच से यीशु मसीह पर विश्वास करेंगे (1पतरस 2:4–10)। इस दृष्टान्त के अनुप्रयोग में (मत्ती 21:43) यीशु मसीह ने *दूसरे व्यक्ति के लिये बहुवचन* का उपयोग किया और अपने उस समय के दर्शकों (सुनने वाले लोगों) पर अपने अनुप्रयोग का निर्देशन किया!

यीशु द्वारा दृष्टान्त के अनुप्रयोग के तुरन्त बाद, उनके सुननेवालों की दूसरी प्रतिक्रिया भी आ गयी (21:45–46)। मुख्य याजक, व्यवस्थापक और इस्राएल के प्राचीनों(मत्ती 21:15,23,45) को अब एहसास हो गया था कि यीशु उनके बारे में बोल रहे थे। वे अच्छी तरह से जानते थे कि उन्होंने और उसके अनुयायियों ने यीशु मसीह को अस्वीकार किया है। हालांकि वे यीशु को बन्धी बनाने और उसे नष्ट करने के लिए गिरफ्तार करना चाहते थे, लेकिन उन्हें डर था क्योंकि लोगों का मानना था कि वह एक भविष्यद्वक्ता है। कुछ दिनों पहले, आम लोगों की भीड़ ने उनका दाऊद के पुत्र (मसीह) के रूप में यरूशलेम में स्वागत किया था और बच्चों ने मन्दिर में दाऊद के पुत्र के रूप में उनकी स्तुति की थी।

अभी तक भी लोगों ने यीशु को वह सम्मान नहीं दिया था जिसके लिए वह वास्तव में आया थाः अर्थात मसीह जो पाप के लिये प्रायश्चित के बलिदान के रूप में अपना जीवन देने आए थे (यशायाह 53)। भीड़ ने उन्हें "भविष्यद्वक्ता" या "राजा" के रूप में माना (यशायाह 9:6), अर्थात राजनीतिक मसीह के रूप में जो रोमी साम्राज्य के जूए से इस्राएल को मुक्त करेगा (लूका 23:2, यूहन्ना 6:14–15, 18:36–37, 19:12 तुलना प्रेरितों के काम 1:6)।

3. दृष्टान्त के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण की पहचान करें।

परिचय दें। यीशु ने दृष्टान्त की कहानी में हर विवरण को कुछ न कुछ आध्यात्मिक अर्थ नहीं दिया। प्रासंगिक विवरण दृष्टान्त की कहानी में वे विवरण हैं जो दृष्टान्त के केन्द्रिय बिन्दु या मुख्य विषय या दृष्टान्त के अध्याय को सुदृढ़ करते हैं। इसलिए, हमें दृष्टान्त की कहानी के प्रत्येक विवरण के लिये अपने दिमाग से कोई आध्यात्मिक अर्थ नहीं निकालना चाहिए।

खोजें और चर्चा करें। इस दृष्टान्त की कहानी में कौन–सा विवरण वास्तव में आवश्यक या प्रासंगिक है ?

ध्यान दें।

दाख की बारी। दाख की बारी की तस्वीर हमें उस समय के इस्राएल देश की याद दिलाती है। दृष्टान्त स्पष्ट रूप से भजन संहिता 80 और यशायाह 5 पर आधारित है।

भजन संहिता 80:8–16 में वर्णन किया गया है कि जिस प्रकार परमेश्वर मिस्र से दाख को बाहर लाते हैं ठीक उसी प्रकार वह अपने लोगों को निर्गमन करते हैं और परमेश्वर रहित राष्ट्रों को फिलिस्तीन से बाहर निकालने के बाद वह वहाँ दाख की बेल लगाते हैं। वह बेल बड़ी होकर भूमध्य सागर से होकर फरात नदी तक फैल गई। बेल स्पष्ट रूप से इस्राएल के राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करती है, विशेष रूप से राजा दाऊद और राजा सुलैमान के समय के दौरान (1000 ई0 पू0)(1राजा

4:20-21)।

यशायाह 5:1-7 में "दाख की बारी" के रोपण का वर्णन किया गया है। इसके चारों और एक दिवार बनाई गई है, और चौकीदारी के लिए गुम्मट बनाए गये और इसके अन्दर दाखरस निकालने के लिए कोल्हू बनाए। परमेश्वर ने इस दाख की बारी से अच्छे फल की उम्मीद की थी। लेकिन क्योंकि इस्राएल राष्ट्र केवल खराब फल ही देता था, परमेश्वर ने भविष्यद्वाणी की कि वह इस को तोड़ देगा, दाख की बारी को रौंदने देगा और उसे बंजर भूमि बना देगा। "दाख की बारी" स्पष्ट रूप से इस्राएल के राष्ट्र का प्रस्तुतिकरण करती है विशेष रूप से यशायाह भविष्यद्वक्ता (700 ई0 पू0) के समय दौरान। इस प्रकार, बाद में, जब इस्राएल परमेश्वर से दूर हो गया, तो परमेश्वर ने दीवार को तोड़ने की अनुमति दी, अगूंर को चोरी करने दिया, और बेल को काट दिया गया और आग से जला दिया गया। यह काल इस्राएल के असीरिया में बंधुआई में जाने से *आरम्भ* हो गया था (722/721 ई0 पू0) और बेबीलोन (587/586 ई0 पू0) और मसीह के आगमन में *पूरा* हुआ। इस्राएल की ऐसी ही तस्वीर बेल के रूप में यशायाह 27:2-3, यिर्मयाह 2:21, यहेजकेल 15:1-6, 19:10-14, होशे 10:1-2।

<u>दाख की बेल की तस्वीर यीशु मसीह में अपनी अंतिम पूर्णता तक पहुंचती है।</u> यूहन्ना 15:1-6 में वह कहता है "मैं दाखलता हूँ: तुम डालियाँ हो। जो मुझ में बना रहता है और मैं उसमें, वह बहुत फल फलता है, क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते। यदि कोई मुझ में बना न रहे, तो वह डाली के समान फेंक दिया जाता, और सूख जाता है; और लोग उसे बटोरकर आग में झोंक देते हैं, और वे जल जाती हैं"(11:20-23 भी देखें)। यीशु मसीह स्वयं ही सच्ची दाखलता है! यीशु मसीह के द्वारा और उसके माध्यम से केवल इस्राएल के राष्ट्र में महत्व है। जो कोई भी यीशु मसीह को अस्वीकार करता है वह अब सच्चा इस्राएली नहीं है (होशे 1:9) और जो कोई भी यीशु मसीह को स्वीकार करता है वह सच्चा इस्राएली है (देखें. गलातियों 6:12-16)!

<u>परमेश्वर ने *न तो* इस्राएल के भौतिक राष्ट्र को *समाप्त* किया और *न हीं* उसने कलीसिया के साथ (इस्राएल के भीतर सच्चे विश्वासी) उसका *स्थानापन्न* किया, बल्कि पुराने नियम के इस्राएली लोगों (इस्राएल के भौतिक राष्ट्र के भीतर विश्वासियों) को एक उच्च योजना में लगातार वही स्थान दिया (जिसमें भविष्यद्वाणियाँ) पूरी हुई और छाया वास्तविकता बन गई)(लूका 4:21)(और छाया वास्तविकता बन गई)(कुलुस्सियों 2:17) और संसार में सभी देशों के विश्वासियों को शामिल करने के लिए इस राज्य को बढ़ाया!</u> जबकि इस्राएल का भौतिक या राष्ट्रीय(जातियाँ) राष्ट्र एक राष्ट्र के रूप में बना रहेगा, लेकिन इस्राएल राष्ट्र को अब परमेश्वर की निज प्रजा के रूप में अब नहीं देखा जाएगा। रोमियों 9:6 कहता है "परन्तु यह नहीं कि परमेश्वर का वचन टल गया, इसलिये कि जो इस्राएल के वंश हैं (अर्थात इस्राएल में पैदा हुए सभी लोग) वे सब इस्राएली (परमेश्वर के चुने हुए और उस पर विश्वास करने वाले लोगे) नहीं।"

फिर भी, दुष्ट किसानों के दृष्टान्त में दाख की बारी इस्राएल के भौतिक या भौगौलिक राष्ट्र का उल्लेख नहीं करती है। <u>"दाख की बारी" परमेश्वर के चुने हुए लोगों की स्थिति के विशेषाधिकार का उल्लेख करती है। यह परमेश्वर के चुने हुए लोगों के विशेष विशेषाधिकार लाभ, अवसर और स्थिति का उल्लेखित करती है। जिसे पुराने नियम के समय के दौरान इस्राएल राष्ट्र को दिया गया था।</u> यह चीजें इस्राएल के राष्ट्र को एक चुने हुए बीज़ के रूप (उत्पत्ति 12:3) और उनको उसके गुणों के साथ

परमेश्वर की वाचा के आधार पर दिया गया था(उत्पत्ति 22:17-18)।

विशेष रूप से (मत्ती 21:43) में दी गयी व्याख्या या अनुप्रयोग, यीशु स्पष्ट करते हैं कि वह परमेश्वर की पुरानी वाचा के लोगों(इस्राएल) के बारे में नहीं, परन्तु "परमेश्वर के राज्य" के बारे में बात कर रहे थे। यीशु ने यह नहीं कहा कि वह "दाख की बारी" (इस्राएल का राष्ट्र) दूसरे लोगों को दे देगें, परन्तु उन्होंने कहा कि वह "दाख की बारी" (सभी विशेषाधिकारों के साथ परमेश्वर का राज्य) को इस्राएल से लेकर दूसरे लोगों के दे देगें। वह कहते हैं कि वह उस विशेष विशेषाधिकारों लाभ, अवसरों और परमेश्वर के चुने हुए लोग कहलाने के अधिकार को इस्राएल के भौतिक और भौगोलिक राष्ट्र से वापस ले लेगें और अन्य लोगों को दे देगें (कलीसिया में यहूदी मसीही और गैर-यहूदी मसीही) जो परमेश्वर के राज्य में फल लाएगें। इस प्रकार, "दाख की बारी" दृष्टान्त में एक आवश्यक या प्रासंगिक विवरण है।

दाख की बारी का स्वामी। सम्पूर्णः दृष्टान्त में, यह बात ता स्पष्ट है कि "दाख की बारी" (परमेश्वर के राज्य के विशेष विशेषाधिकार) कभी भी इस्राएल की भौतिक सम्पत्ति नहीं थी, वरन वह हमेशा अपने स्वामी की थी, जो स्वयं परमेश्वर को प्रतिनिधित्व करती है! परमेश्वर के राज्य के विशेषाधिकार इस्राएल के लोगों का संचालन करने के लिए एक समय की अवधि (पुराने नियम की अवधि) के लिए *सौंपे गये* थे। परन्तु अब, संसार में अपने पहले आगमन पर, यीशु मसीह इन विशेषाधिकारों को इस्राएल के भौतिक राष्ट्र से वापस ले लेकर इसे परमेश्वर के नए नियम के लोगों को देने पर था। (इसमें सभी मसीही शामिल हैं, चाहे वे मूल रूप से यहूदी हो या गैर यहूदी हों) (गलातियों 3:26-29; इफिसियों 3:4-6)। इसलिये, "दाख की बारी के स्वामी" दृष्टान्त में एक आवश्यक या प्रासंगिक विवरण है।

दुष्ट किसान। दृष्टान्त की व्याख्या या अनुप्रयोग में यीशु बिल्कुल स्पष्ट करते हैं कि "परमेश्वर के राज्य का विशेषाधिकार" भौतिक यहूदियों के राष्ट्र से वापिस ले लिया गया है जो उनके अगुवों (महायाजक, व्यवस्था के शिक्षक और इस्राएल के प्राचीनों) को दर्शाता है। "दुष्ट किसानों" में वे सभी यहूदियों के साथ धार्मिक अगुवे, व्यवस्थापक और इस्राएल के प्राचीन तथा उनका अनुकरण करने वाले वहां के सारे लोग (जो कि इस्राएल राष्ट्र में रहने वाले सभी अविश्वासी हैं) आते हैं। इस तरह से दुष्ट किसान इस्राएल के सम्पूर्ण भौतिक (आध्यात्मिक नहीं) राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करता है। प्रचारक मत्ती मरकुस और लूका भी स्पष्ट रूप से कहते हैं कि ये लोग जानते थे कि यीशु मसीह उनके बारे में बात कर रहे थे। इस प्रकार, "दुष्ट किसान" दृष्टान्त में एक आवश्यक प्रासंगिक विवरण है।

अन्य किसान, जो फसल के समय में मालिक का हिस्सा उसे देगें। यीशु के अनुसार "अन्य किसानों" के विषय में उसकी व्याख्या और अनुप्रयोग उन अन्य राष्ट्रों का उल्लेख करती है जो राज्य के लिये फल लाएंगे (मत्ती 21:43)। राज्य (विशेष विशेषाधिकार और परमेश्वर के चुने हुए लोगों की स्थिति) इस्राएल के भौतिक राष्ट्र के हाथों से छीनकर दूसरे लोगों को अर्थात एक आत्मिक जाति को दे दिया जाएगा। यीशु मसीह ने इस्राएल में रहने वाले अपने चेलों और अन्य विश्वासियों (उनके छोटे झुण्ड) राज्य दे कर ऐसा करना शुरू किया (लूका 12:32)। यीशु मसीह के पहले आगमन के बाद से ही संसार के सभी राष्ट्रों के मसीही मिलकर परमेश्वर के आत्मिक रूप से चुने हुए लोगों का गठन करते हैं। पुराने नियम में परमेश्वर ने जो इस्राएल देश के बारे में क्या कहा था (निर्गमन 19:6), वह अब नये नियम के समय के दौरान मसीहियों को कहता है (1पतरस 2:-10)। "पर तुम एक चुना हुआ

वंश और राज–पदधारी याजकों का समाज, और पवित्र लोग, और परमेश्वर की निज प्रजा... तुम पहले तो कुछ भी नहीं थे, पर अब परमेश्वर की प्रजा हो।"

अभी तक इन मसीहियों का अधिकांश भाग अन्यजाति राष्ट्र से ही आया था। मसीह के पहले आगमन से लेकर दूसरे आगमन तक परमेश्वर के राष्ट्र या परमेश्वर के लोग संसार के हर राष्ट्र से आये मसीही लोगों से मिलकर बने हैं। (प्रेरितों. 15:14–18; रोमियों 9:25; 2कुरिन्थियों 6:16; गलातियों 3:26–29; इफिसियों 2:11–22; 3:4–6; कुलुस्सियों 3:11; 1पतरस 2:4–10; तीतुस 2:14; प्रकाशितवाक्य 21:3)। इस्राएल में पैदा हुए प्राकृतिक बच्चे नहीं, बल्कि केवल नया जन्म पाये हुए मसीही जो परमेश्वर के राज्य का फल पैदा करते हैं, वे ही मिलकर परमेश्वर का राष्ट्र या परमेश्वर के लोग कहलाते हैं। (रोमियों 9:6–16,24–29; मत्ती 3:7–10; प्रेरितों. 26:17–20)। इस प्रकार, "अन्य किसानों" दृष्टान्त में एक आवश्यक और प्रासंगित विवरण दिया गया है।

दास। दृष्टान्त इस बात की व्याख्या नहीं करता की कि ये दास कौन थे, परन्तु यीशु स्पष्ट रूप से पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं के बारे में ज़िक्र कर रहे थे। एलिय्याह भविष्यद्वक्ता को ईजेबेल से अपने जीवन को बचाने के लिये भागना पड़ा (1राजाओं 19:1–3)। मीका भविष्यद्वक्ता को जेल में डाल दिया गया और उसे केवल रोटी और पीने को पानी दिया जाता था (1राजाओं 22:27)। कलीसिया के फादर जस्टिन शहीद ने अपनी पुस्तक "ट्रायफो से बातचीत" में यहूदियों पर आरोप लगाया की उन्होंने यशायाह को आरी से दो भागों में चीर दिया (इब्रानियों 11:37)। यहूदियों ने बार–बार भविष्यद्वक्ता यिर्मयाह के साथ बुरा व्यवहार किया।

यहूदियों ने उसे मारने की साजिश रची (यिर्मयाह 11)। उनके अपने परिवार ने उसे धोखा दिया (यिर्मयाह 12)। यहूदियों ने उनकी कही गई बातों पर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया (यिर्मयाह 18)। उन्होंने उसे पीटा और शहर के फाटक के पास काठ में जकड़ दिया (यिर्मयाह 20)। सभी झूठे याजक और दुष्ट अधिकारी और राजा उसे मौत की सजा देना चाहते थे, क्योंकि वह सच बोलता था (यिर्मयाह 26)। उन्होंने उसे बन्धी बनाया और पीटा और एक कालकोठरी में कैद कर दिया, जहाँ वह लम्बे समय तक रहा (यिर्मयाह 37)। उन्होंने उसे मिट्टी से भरे एक कुण्ड में फेंक दिया (यिर्मयाह 38)। आरम्भिक मसीही परंपरा कहती है कि भविष्यद्वक्ता यिर्मयाह को उन यहूदियों द्वारा मौत के घाट उतार दिया गया था, जिन्होंने उसे अपने साथ मिस्र जाने के लिये मजबूर किया था (यिर्मयाह 43)। यहेजकेल भविष्यद्वक्ता ने काँटों की चुभन और बिच्छु के डंक के रूप में यहूदियों के उत्पीड़न का अनुभव किया (यहेजकेल 2:6)। उसे पता चला कि पुराने नियम में परमेश्वर की वाचा के लोगों ने उसकी बातें तो सुनी लेकिन उन बातों की अमल नहीं लिया (यहेजकेल 20:43, 33:31–32)। आमोस भविष्यद्वक्ता को कहा गया था कि वह अपनी भविष्यद्वाणियों को कहीं और जाकर करे (आमोस 7:10–15)।

यीशु उस व्यवहार का सार बताते हैं जो इस्राएलियों ने प्रभु के दासों के साथ किया था। मत्ती 5:11-12 में वह कहता है "धन्य हो तुम, जब मनुष्य मेरे कारण तुम्हारी निन्दा करें, और सताएँ और झूट बोल बोलकर तुम्हारे विरोध में सब प्रकार की बुरी बात कहें.... उसी प्रकार उन भविष्यद्वक्ताओं को जो तुम से पहले थे इसी रीति से सताया था।" लूका 6:22-23 में वह कहते हैं "धन्य हो तुम जब मनुष्य के पुत्र के कारण लोग तुम से बैर करेंगे, और तुम्हें निकाल देंगे, और तुम्हारी निन्दा करेंगे, और तुम्हारा नाम बुरा जानकर काट देंगे।... उनके बाप-दादे भविष्यद्वक्ताओं के साथ भी वैसा ही किया करते थे।" और मत्ती 23:29-32,37 में कहता है, "हे कपटी शास्त्रियों और फरीसियों, तुम पर हाय! कि यदि हम अपने बापदादों के दिनों में होते तो भविष्यद्वक्ताओं की हत्या में उनके साझी न होते..... हे यरूशलेम तू जो भविष्यद्वक्ताओं को पत्थराव करते, जो तेरे पास भेजे गए" (लूका 11:47-51, 13:33-35; यूहन्ना 12:36-43 भी देखें) इस प्रकार, स्वामी के "सेवक" दृष्टान्त में एक आवश्यक या प्रासंगिक विवरण है।

इकलौता बेटा और वारिस। दृष्टान्त की व्याख्या और अनुप्रयोग में, यीशु ने यह स्पष्ट किया कि "स्वामी का इकलौता और प्यारा बेटा" खुद यीशु मसीह का प्रतीनिधित्व करता है। वह पत्थर है, जिसे इस्राएल के बनाने वाले ने अस्वीकार कर दिया और जो सबसे महत्वपूर्ण कोने के सिरे का पत्थर बन गया, कोने के सिरे के संदर्भ में भजन संहिता 118:22-23, यशायाह 28:16, मत्ती 21:42, प्रेरितों. 4:11, रोमियों 9:33, इफिसियों 2:20 और 1पतरस 2:6 में लिखा गया है। एक इमारत के कोने के सिरे का पत्थर नींव का एक हिस्सा होता है और इस तरह श्रेष्ठ ढाँचें की संरचना करने में सहायता करता है। लेकिन यह नींव के पत्थर से बढ़कर होता हैः जो की पूरी इमारत को निर्णायक रूप प्रदान करता है। दो दीवारों को एक स्थान पर जोड़ने के कारण यह इमारक को मजबूती प्रदान करता है। बाकि के सारे पत्थरों को इस कोने के सिरे के पत्थर के साथ सामंजस्य बनाना पड़ता है।

कलीसिया के साथ यीशु मसीह का सम्बन्ध एक कोने के सिरे के पत्थर के समान है। उसके महिमामय पुनरुत्थान स्वर्गारोहण और सिंहासन से वह अत्यधिक ऊंचा हो गया है। स्वर्ग से और पवित्र आत्मा के द्वारा, वह विश्वासियों के ह्रदयों में वास करता है, और कलीसिया के हित में पूरे संसार में उनके जीवनों को निर्देशित करता है (तुलना करें इफिसियों 1:22)। लूका 20:18 आगे कहता है कि "जो कोई इस पत्थर पर गिरेगा वह चकनाचूर हो जाएगा, और जिस पर वह गिरेगा, उसे वह पीस डालेगा" जो लोग अभी यीशु मसीह और उसके वचनों से ठोकर खाते हैं, वे नाश हो जाएंगे और न्याय के दिन उन्हें पूरी तरह से कुचल दिया जाएगा। लूका 2:34 में लिखा है कि, " यह बालक बहुत से लोगों के उठने और बहुत से लोगों के ठोकर खाने के कारण के रूप में ठहराया गया है।" यीशु मसीह को अस्वीकार करने वाले सभी लोग (यहूदियों सहित) हमेशा के लिये नाश हो जाएंगे और सभी लोग (यहूदियों सहित) जो यीशु पर विश्वास करते हैं, अनन्तकाल के लिये बच जाएंगे। यह स्पष्ट है कि "एकमात्र पुत्र" का दृष्टान्त आवश्यक और प्रासंगिक विवरण है।

Notes. **4. दृष्टान्त के मुख्य सन्देश को पहचानें।**

परिचय दें। दृष्टान्त का मुख्य सन्देश (केन्द्रीय सन्देश या विषय) या तो व्याख्या या अनुप्रयोग में या कहानी में ही मिल जाता है। जिस प्रकार से यीशु मसीह ने स्वयं दृष्टान्त को समझाया या उसे लागू किया, उससे हममें पता चलता है कि हमें दृष्टान्तों की व्याख्या कैसे करनी चाहिए। *एक दृष्टान्त सामान्य तौर पर केवल एक मुख्य विषय एक महत्वपूर्ण सन्देश एक केन्द्रिय बिन्दु बनाने के लिये*

होता है। इसलिये, हमें कहानी के प्रत्येक विवरण में आत्मिक सच्चाई खोजने की कोशिश नहीं करनी चाहिए, इसके बजाय हमें एक मुख्य विषय की तलाश करनी चाहिए।

चर्चा करें। दृष्टान्त का मुख्य सन्देश क्या है?
ध्यान दें।

मत्ती 21:33-39 में दुष्ट किसानों का दृष्टान्त "परमेश्वर के राज्य के सन्देश वाहकों" और इस्राएल के भौतिक राष्ट्र की प्रतिक्रिया के बारे में है।
दृष्टान्त का मुख्य सन्देश निम्नलिखित है, "उसके प्रिय पुत्र यीशु मसीह में व्यक्त किये गए परमेश्वर के अगम्य प्रेम के प्रति इस्राएल के भौतिक राष्ट्र के सबसे अनुचित पाप के बावजूद, यीशु मसीह अपने विरोधियों पर विजय प्राप्त करेगा और भजन. 118:22-22 के अनुसार की गई भविष्यद्वाणी के अनुरूप अपना राज्य स्थापित करेगा।" सबसे बड़े विरोध और परमेश्वर के सन्देश वाहकों को अस्वीकृति देने के बावजूद, संसार पर अपना राज्य स्थापित करने का परमेश्वर का उद्देश्य असफल नहीं हो सकता है।

परमेश्वर के सन्देशवाहक का प्रतिउत्तर देना परमेश्वर के राज्य की बुनियादी विशेषताओं में से एक है। परमेश्वर के राज्य के सच्चे लोग उत्तरदायी और सिखाने योग्य होते हैं। वे नये नियम के समय के प्रचारकों और शिक्षकों को परमेश्वर के दूतों को स्वीकार करते हैं; जो बाइबल का सही अनुवाद करते और जो बाइबल का सन्देश उन तक विश्वासयोग्यता के साथ पहुंचाते हैं, इन सबसे ऊपर वे यीशु मसीह को उद्धारकर्ता और राजा के रूप में अपने ह्रदयों ओर जीवनों में स्वीकार करते हैं।

"दुष्ट किसान" जिन्होंने स्वामी को दाख की पैदावार का हिस्सा देने से इंकार कर दिया, उसके दासों के साथ दुर्व्यवहार किया और उसके इकलौते प्रिय पुत्र को मार डाला, वे इस्राएल के भौतिक राष्ट्र का उनके अविश्वासी अगुवों और उनके अनुयायियों प्रतिनिधित्व करते हैं। उनके द्वारा मसीह को स्वीकार न करने का परिणाम उनके स्वयं का भयानक विनाश हुआ अर्थात इस्राएल के भौतिक राष्ट्र का विनाश जिन्हें संसार में परमेश्वर के लोगों के रूप में हुए देखा जाता है। परमेश्वर ने <u>"दाख की बारी" (अर्थात संसार में परमेश्वर के लोग होने का विशेषाधिकार)</u> उनके हाथ में सौंप दिया था लेकिन उन्होंने परमेश्वर के भविष्यद्वक्ताओं के साथ दुर्व्यवहार किया और उन्हें मार डाला और अंत में उन्होंने मसीह अर्थात यीशु मसीह को क्रूस पर चढ़ा दिया। इसलिए परमेश्वर ने अन्य लोगों को "दाख की बारी" दे दी, जो इसके योग्य फल लाते हैं। "अन्य लोगों" में सभी यहूदियों को *बाहर* नहीं किया गया है, ठीक जैसे कि इसमें सभी अन्यजातियों को भी *शामिल* नहीं किया गया है। उसी प्रकार इसमें इस्राएल के भी मसीही शामिल हैं।

दो बातों का ध्यान रखना होगाः

प्रथम। परमेश्वर ने इस्राएल राष्ट्र से सम्बन्धित सभी यहूदियों के प्रति अपने मन को कठोर या अस्वीकार नहीं किया। रोमियों 9 से 11 अध्याय के अनुसार परमेश्वर ने स्वयं को "एक छुटकारे के लिये आरक्षित किया है। वे सुसमाचार सुनते हैं और वे बचाए जाएंगे (रोमियों 10:17-18; 9-27)। सभी यहूदी जो अपने अविश्वास में कायम नहीं बने रहेंगे, वे निश्चित रूप से "जैतुन के पेड़" के हिस्सा जरूर बनेंगे, जो "परमेश्वर के लोगों" का प्रतिनिधित्व करता है, जिसमें यहूदियों और गैर-यहूदियों के बीच सभी विश्वासी शामिल होंगे(रोमियों 11:23)।

द्वितीय। यदि परमेश्वर के अविश्वासी यहूदियों को अस्विकार करेगें तो निश्चित रूप से वह अविश्वासी अन्यजातियों को भी अस्विकार करेगें। इसलिये कोई भी गैर यहूदी, यहूदियों के खिलाफ घमण्ड न करें, और न ही यहूदियों को सताएं, बल्कि उन्हें यहूदियों के परिवर्तन के लिये प्रार्थना करनी चाहिए और उन्हें सुसमाचार का प्रचार करना चाहिए। केवल परमेश्वर को यहूदियों और अन्यजातियों का न्याय करने और बचाने का अधिकार है! पुराने और नये नियम दोनों का सम्बन्ध "नस्लवाद" से नहीं वरन "परमेश्वर के लोगों" से है, चाहे वे केवल इस्राएल देश हों या संसार के सभी राष्ट्रों से आए हों, जिसमें इस्राएली भी शामिल हैं।

---

5. बाइबल में समानांतर और विषम खण्डों के साथ दृष्टान्त की तुलना करें।

परिचय दें। कुछ दृष्टान्त एक-दूसरे के समान हैं और उनकी तुलना की जा सकती है। हालांकि, सभी दृष्टान्तों में सच्चाई के समानांतर या विपरीत सत्य है जिन्हें बाइबल के अन्य अंशों में पढ़ा जा सकता है। सबसे महत्वपूर्ण प्रासंगिक पदों को खोजनें की कोशिश करें जो हमें दृष्टान्त की व्याख्या करने में मदद करते हैं। हमेशा बाइबल की प्रत्यक्ष स्पष्ट शिक्षा के साथ दृष्टान्त की व्याख्यां की जाँच करें।

(1) अंजीर के पेड़ को शाप दिया जाना।

मत्ती 21:18-19। यीशु द्वारा दुष्ट किसानों का दृष्टान्त बताने से ठीक पहले, उसे भूख लगी थी और वह थोड़ी दूरी पर लगे अंजीर के पेड़ के पास फल की तलाश में गया। लेकिन उसे पत्तियों के अलावा इस पर कुछ नहीं मिला। क्योंकि उसे उस पर कोई फल नहीं मिला, तो उसने उसे शाप दिया (मरकुस 11:20)! यीशु पेड़ से गुस्सा नहीं था। इस घटना का बहुत गहरा अर्थ था और दुष्ट किसानों के दृष्टान्त ने इस गहरे अर्थ को समझा दिया।

अंजीर के पेड़ पर बहुत पत्ते तो थे लेकिन कोई फल नहीं था। लूका 13:6-9 इस प्रकार कहता है "अंजीर का पेड़" इस्राएल के अत्यधिक विशेषाधिकार प्राप्त राष्ट्र का प्रतीक था। अंजीर के पेड़ की तरह इस्राएल राष्ट्र ने मन्दिर में कई बलिदान चढ़ाने के द्वारा स्वयं को एक धार्मिक और पवित्र व्यक्ति होने का नाट्क किया। लेकिन इस्राएलियों ने मन्दिर को एक बाज़ार में बदल दिया था, जहाँ वे जानवरों को बेचते थे और वहां के अगुवे यीशु को मारने की साज़िश रच रहे थे। इसके अलावा मन्दिर के बलिदानों का कोई मतलब नहीं था। इस्राएल राष्ट्र धार्मिक गतिविधियों से भरा हुआ था, लेकिन उनमें कोई ईमानदारी या सच्चाई नहीं थी। अंजीर के पेड़ को शाप देकर, जो अगले दिन तक सूख गया था, यीशु ने इस्राएल के अविश्वासयोग्य देश को परमेश्वर के लोगों के पतन की भविष्यद्वाणी की थी।" यीशु मसीह ने यहूदियों को अस्वीकार नहीं किया था, लेकिन यह भविष्यद्वाणी की थी कि परमेश्वर का राज्य अब इस्राएल देश में स्थापित नहीं होगा। मसीह के प्रथम आगमन से ही परमेश्वर

की नये नियम की वाचा में परमेश्वर का राज्य स्थापित है जिसमें यहूदियों में से और गैर–यहूदियों में से (अन्यजातियों के लोग) विश्वास करने वाले लोग शामिल थे। केवल "पत्तियों" के बजाय वे परमेश्वर के राज्य के फल में लाएँगे (मत्ती 8:11–12, 1पतरस 2:4–10)। परमेश्वर के लोगों की उपस्थिति परमेश्वर की लोगों के लिए मार्ग तैयार करती है।

(2) दो पुत्रों का दृष्टान्त।

मत्ती 21:28–32। दो बेटों के दृष्टान्त और दुष्ट किसानों के दृष्टान्त के बीच समानांतर और कुछ भिन्नताएं हैं। समानता के रूप में दोनों एक दाख की बारी की देखभाल करते हैं और दोनों दृष्टान्तों में यीशु ने यहूदियों के अगुवों और अनुयायियों को ध्यान में रखा, जिनकी उन्होंने निन्दा की थी। अन्तर के रूप में, दूसरा दृष्टान्त अधिक लम्बा है और इसमें अधिक विवरण है। हालांकि, दोनों के पास केवल एक मुख्य शिक्षा है, जो मत्ती 21:40–43 में स्पष्ट रूप से सामने आती है। दृष्टान्त के दृष्टिकोण और रूपक पहले दृष्टान्त की तुलना में कहीं अधिक निकट है। पहले दृष्टान्त में इस्राएल के अगुवों द्वारा यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के तिरस्कार पर ज़ोर दिया है, जबकि दूसरा दृष्टान्त इस्राएल के पूरे लोगों द्वारा पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं और मसीह अर्थात यीशु मसीह के तिरस्कार पर बल देता है। यही कारण है कि परमेश्वर के राज्य को उनसे वापिस ले लिया जाएगा और अन्य लोगों को दे दिया जाएगा।

(3) विवाह के भोज का दृष्टान्त।

मत्ती 22:1–14। दुष्ट किसानों के दृष्टान्त और विवाह के भोज के दृष्टान्त के बीच समानता और कुछ भिन्नता है। समानता के तौर पर, दोनों दृष्टान्त परमेश्वर के धैर्य और यहूदियों की विरासत के साथ उनकी संभावित देखभाल को चित्रित करते हैं। भिन्नताओं पर बात करें तो, विवाह के भोज का दृष्टान्त उन लोगों की सख़्त सजा पर ज़ोर देता है जो परमेश्वर के साथ अपनी सहभागिता में लापरवाह हैं और विवाह के भोज में उपयुक्त कपड़ों को पहने बिना विवाह के भोज में चले जाते हैं। दुष्ट किसानों के दुष्टान्त में अविश्वासी यहूदियों की अस्वीकृति और विश्वास करने वाले अन्यजातियों को बुलाने और स्वीकार करने पर ज़ोर दिया गया है।

---

6. दृष्टान्त की मुख्य शिक्षाओं को सारांशित करें।

चर्चा करें। दृष्टान्त की मुख्य शिक्षाएं या सन्देश क्या है? यीशु मसीह ने हमें क्या सिखाया कि हम क्या *जाने* और *विश्वास करें* और उसने हमें क्या *होने* के और क्या *करने की शिक्षा दी?*

ध्यान दें।

(1) अध्याय का मुख्य सन्देश।

मत्ती 21:33–39 में दिया गया दुष्ट किसानों का दृष्टान्त "परमेश्वर के राज्य के सन्देशवाहकों" और इस्राएल के भौतिक राष्ट्र की प्रतिक्रिया के बारे में दृष्टान्त है।

मुख्य सन्देश निम्नलिखित है, "उसके प्रिय पुत्र यीशु मसीह में व्यक्त परमेश्वर के अगम्य प्रेम के प्रति इस्राएल के भौतिक राष्ट्र के अनुचित पाप के बावजूद, यीशु मसीह अपने विरोधियों पर विजय प्राप्त करेंगे और भजन संहिता 118:22–23 में भविष्यद्वाणी के अनुसार अपने राज्य को स्थापित करेगा।" सबसे बड़े विरोध और परमेश्वर के सन्देशवाहकों के तिरस्कार के बावजूद, परमेश्वर का संसार में अपना राज्य स्थापित करने का उद्देश्य असफल नहीं हो सकता। परमेश्वर के राज्य का विशेषाधिकार लोगों को

दिया गया है, जो संसार के हर देश में परमेश्वर के राज्य के योग्य फल उत्पन्न करते हैं।

(2) इस्राएल राष्ट्र और मसीही कलीसिया।

यीशु मसीह के संसार में आने के दौरान, परमेश्वर के पुराने नियम के लोगों के रूप में इस्राएल के राष्ट्र ने यीशु मसीह को अस्विकार किया था । इस प्रकार उन्होंने अपने आप को दोषी ठहराया और परमेश्वर द्वारा उन्हें उसकी वाचा के लोगों के रूप में तिरस्कृत किया गया (मत्ती 8:11-12)। तब से, सभी लोग जो यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं, यहूदियों और अन्यजातियाँ दोनों परमेश्वर के नये वाचा के लोग हैं (यूहन्ना 10:16; रोमियों 10:12-13; 2कुरिन्थियों 6:16; गलातियों 3:26-28; इफिसियों 2:11-22; कुलुस्सियों 3:11-12; 1पतरस 2:9-10; 1यूहन्ना 3:4-10)। वे पूरे संसार में मसीही कलीसिया को गठित करते हैं। परमेश्वर के राज्य के सभी विशेषाधिकार उनके हैं!

(3) राज्य के लिये फल लाने का अर्थ।

मत्ती 3:7-12 में, जब यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने परमेश्वर के राज्य के बारे में सन्देश दिया, तो उसने कहा, "मन फिराव के योग्य फल लाओ!... इसलिए जो-जो पेड़ अच्छा फल नहीं लाता, वह काटा और आग में झोंका दिया जाता है।" केवल उन लोगों को जिन्हें पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मिला है (अर्थात्, पवित्र आत्मा द्वारा पुनः जन्म मिला है) उनको गेहूँ की तरह परमेश्वर के खलिहान में इकट्ठा किया जाएगा। बाकि सभी को कभी भी न बुझने वाली आग में भूसे की तरह जलाया जाएगा।

फल लाना धार्मिक कार्यों (हर दिन कई बार प्रार्थना करने, निश्चित समय पर उपवास करने, एक निश्चित धनराशी को देने या तीर्थ यात्रा करने आदि) या लोगों द्वारा अपनी शक्ति सामर्थ्य द्वारा किये गए अच्छे कार्यों को दर्शाना नहीं वरन उन कार्यों से हैं जो पवित्र आत्मा उनमें उत्पन्न करता है (मत्ती 3:8; यूहन्ना 15:16; गलातियों 5:22-23; कुलुस्सियों 1:6)।

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***(प्रतिक्रियाएँ)*** **दूसरों के लिए प्रार्थना**

आज आपने जो कुछ आपने सीखा है, उसके प्रतिउत्तर में बारी बारी परमेश्वर से ***छोटी-छोटी प्रार्थना करें।***

या समूह को दो या तीन लोगों में विभाजित करें और आज जो आपने सीखा है उसके प्रतिउत्तर में परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	***(निर्धारित कार्य)*** **अगले अध्याय के लिए**

(***समूह अगुवा।*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में घर पर इसकी तैयारी करने को दें या उन्हें इसकी प्रतिलिपि लेने दें)।

1. प्रतिबद्धता चेले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हो।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर "दुष्ट किसानों का दृष्टान्त" का प्रचार करें, पढ़ाएँ या अध्ययन करें।

3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। प्रतिदिन **व्यवस्थाविवरण 8,9,10 और 11** के आधे अध्याय से परमेश्वर के साथ एक शांत समय बिताएँ।
   पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
4. याद करना। **समीक्षा श्रृखंला 1, "परमेश्वर का राज्य"** (1) राज्य में प्रवेश करना। यूहन्ना 3:3,5, (2) राज्य में सेवा करने बाद आपका वापस स्वागत है। लूका 9:62, (5) साम्राज्य की विजय। दानिय्येल 2:44।
   पिछले 5 स्मरण किए गए बाइबल पदों की दैनिक समीक्षा करें।
5. <u>बाइबल अध्ययन</u>। घर पर अगला बाइबल अध्ययन तैयार करें। **रोमियों 2:1-16।**
   बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों की विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
6. <u>प्रार्थना</u>। इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन संहिता 5:3)।
7. प्रचार करने के लिए परमेश्वर का राज्य विषय पर <u>अपने लेख का अद्यपन करें</u>। शांत समय के अपने नोट्स, अपने स्मरण किए नोट्स, अपने शिक्षण नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें।